By:- Sunita Kumari
Dept. of History
J.N.C. Madhubani

Sultanate Central Government
(सल्तनत काल का केन्द्रीय शासन)

सद्र-उस-सुदूर:- यह मंत्री धार्मिक कार्यों के लिए उत्तरदायी था तथा राजकोष दान विभाग का अध्यक्ष भी यही होता था। यह विभाग 'जकात' नामक कर से प्राप्त होने वाला धन को केवल मुस्लिम जनता पर व्यय करता था।

काजी-उल-कुजात:- प्रायः सद्र-उस-सुदूर ही इस कार्य पर कार्य करता था और वह न्याय विभाग का अध्यक्ष होता था।

मजलिस-ए-खलवत:- उपर्युक्त मंत्रियों के अतिरिक्त सुल्तान को परामर्श देने के लिए परामर्शदाताओं की विशाल संख्या होती थी और इसे ही 'मजलिस-ए-खलवत' कहते थे। सुल्तान के कुछ व्यक्तिगत मंत्री, विश्वसनीय पदाधिकारी तथा प्रमुख उलेमा ही इसके सदस्य होते थे।

खरीद-ए-मुमालिक:- यह सूचना तथा गुप्तचर विभागों का अध्यक्ष होता था तथा डाक-चौकियों, आदि का भी प्रबंध करता था।

शाही प्रबन्धक:- यह मंत्री सुल्तान के गृह विभाग का अध्यक्ष होता था। इसका शासन पर पर्याप्त प्रभाव होता था।

वास्तव में सुल्तानों के मंत्री उनके सेवक होते थे। उपर्युक्त सभी मंत्री सुल्तान के आज्ञाकारी थे और सुल्तान द्वारा ही नियुक्त किये जाते थे। मंत्रियों की नियुक्ति उनकी योग्यता एवं प्रतिभा पर निर्भर थी। यद्यपि सुल्तान के उत्तम परामर्श को मान लेता था परन्तु मानना या न मानना उसकी इच्छा पर निर्भर था।

4. सैनिक संगठन

भारत में मुसलमान विदेश से आये थे। उन्हें शासन स्थापित करने के साथ-साथ रक्षा की भी समुचित व्यवस्था करनी पड़ी। जिसके लिए उन्हें एक विशाल सेना रखनी पड़ी। इन्होंने हिन्दुओं के राज्यों को जबरदस्ती छीना था। अतएव उनसे भी राज्य की रक्षा करनी होती थी। आये दिन देश में विद्रोह भड़क उठते थे। इन विद्रोहों को दबाने के लिए सुल्तानों को एक शक्तिशाली सेना का निर्माण करना पड़ा था। इन विद्रोहों को दबाने के लिए अनेक प्रकार के सैन्य संगठन का निर्माण किया। सीमा की सुरक्षा का प्रश्न भी सुल्तानों के सामने महत्वपूर्ण था। इन सभी कारणों से दिल्ली के सुल्तानों ने एक शक्तिशाली सेना का निर्माण किया था। अतः सैनिक व्यवस्था के लिए 'दीवाने अर्ज' विभाग की स्थापना की थी। जिसका प्रधान 'आरिज-ए-मुमालिक' होता था। सेना में कई प्रकार के रखे जाते थे। प्रथम सैनिक प्रान्तीय गवर्नरों के अधीन थे। इनको वित्युक्ति गवर्नर या अमीर करते थे। ये सैनिक अमीर, सूबेदार अथवा गवर्नर के प्रति उत्तरदायी होते थे तथा सुल्तान की आज्ञा पर युद्ध क्षेत्र में जाया करते थे। अन्य प्रकार के सैनिक हिन्दुओं के विरुद्ध युद्ध में भाग लेते जाते थे। ये लोग धर्म युद्ध में भाग लेते थे। सेना के लिए घोड़े अरब तथा तुर्किस्तान से मंगाये जाते थे। घोड़ों को दागने की व्यवस्था भी की गयी थी। सेना में हाथी तथा पैदल होते थे। पैदल सैनिक 'पायक' कहलाते थे। ये लोग बर्छे, भाले तथा तलवारों से युद्ध करते थे। अलाउद्दीन खिलजी के समय में तोपखाने का प्रयोग होने लगा था। किलों को उड़ाने के लिए सुरंगें थी तथा राज्य की ओर से अनेक दुर्ग भी बनवाये गये थे।